ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-1 * ISSUE-10*JUNE-2014

चित्रकार निकोलस रोरिख – के जीवन के भारत को समर्पित चौबीस वर्ष (1923 से 1947) – एक समीक्षा

कुशल नागर
एसोसिएट प्रोफेसर
आर्ट विभाग
शिव मन्दिर छुट्टन लाल गर्ल्स कॉलेज
बुलन्दशहर

सारांश

एक सौ बत्तीस वर्ष पूर्व रुस के सेन्ट पीटर्सवर्ग नामक स्थान पर एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति निकोलस रोरिख का जन्म 9 अक्टूबर 1874 को हुआ। उनके व्यक्तित्व को केवल कुछ शब्दों में पन्नों पर उतारना न्याय संगत न होगा क्योंकि वे न केवल एक उच्चकोटि के कलाकार थे अपितु एक वैज्ञानिक, कवि, लेखक, संग्रहकर्त्ता, श्रेष्ठ अध्यापक, डिजाइनर, यात्री आदि अनेक विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में समाहित थीं। उनके पिता कास्सटेनाटिन रोरिख़ रुस के महान शासक पीटर के समय में सेन्ट पीटर्सवर्ग के प्रसिद्ध वकील थे।

मुख्य शब्द : बैले – रुस का पारम्परिक नृत्य। सेन्टपीटर्स वर्ग – रुस का शहर। डिजाइनर – स्टेज व पोशाकों को नाटक या नृत्य के अनुसार बनाना। बीहड़ पहाड़ी क्षेत्र – पहाड़ों का वह स्थान जहाँ दूर – दूर तक मनुष्य का निवास न हो।

प्रस्तावना

वकील पिता की रोरिख को अपनी तरह एक वकील बनाने की चाह में उन्होंने कानून से स्नातक किया परन्तु रोरिख का गहरा लगवा कला से था इन्होंने 1897 में अपनी पहली कला कृति "The Massenger" के लिये जनता का सम्मान प्राप्त किया। निकोलस रोरिख की शिक्षा–दीक्षा रूस व अन्य देशों में हुई। इन्होंने सेंट पीटर्सवर्ग विश्वविद्यालय में इतिहास व भाषा शास्त्र के अध्ययन के साथ–साथ पुरातत्व संस्थान में भी अध्ययन किया।

चहुमुखी प्रवृतियों वाले रोरिख ने किशोरावस्था (15 वर्ष की आयु) से ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इनकी ये कवितायें बाद में 1929 में ''फ्लेम इन चालिके'' के नाम से प्रकाशित हुई।

रोरिख ने अपने जीवन, विचार व अनुभवों को विभिन्न माध्यमों के द्वारा व्यक्त किया है परन्तु उनके जीवन का सबसे सार्थक माध्यम कला थी जिसमें उन्होंने अनेक भावों को पिरोया। उनकी कला में शान्ति भाव प्रभावशाली रुप में देखने को मिलता है उनकी शान्ति की कल्पना सौन्दर्य पर आधारित थी। भारत को वे सौन्दर्य की भूमि मानते थे। संभवतः इसी कारण वे भारतीय संस्कृति व कला से बहुत प्रभावित थे। 1899 में ''रूस में अमेरिकन कला'' शीर्षक से अपनी प्रथम कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। उनकी कला यात्रा रूस से आरम्भ हुई। 1903 में पहली बार रूस में अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए उन्होंने Churches, Monaste Ries, ancient monuments (75 sketches) आदि बनाए। इसी बीच वे भारत तथा यहां की कला से परिचित हो चुके थे। 1906 में रूस में रहकर अजन्ता की दो आकृतियों का अंकन किया। इस तरह भारत व भारतीय कला के प्रति आकर्षण बढ़ता ही गया। भारत आने से पहले उन्होंने रूस में रहकर हिम, नदी, मल्लाह, नौका व यात्रियों से सम्बन्धित चित्रों की रचना की।

1901 में निकोलस रोरिख़ ने हेलेना (Yelana) से विवाह किया। जो एक उच्च शिक्षित व धार्मिक विचारों वाली महिला थी। वे नये कलाकारों को कला के लिये प्रोत्साहित करने वाली संगठन की सचिव भी थी। हेलेना के पिता एक प्रसिद्ध आर्किटेक्ट थे। हेलेना की धर्म व दर्शन में विशेष रूचि थी। इन्हीं विषयों पर हेलेना ने लेखन कार्य भी किया। रोरिख़ दो पुत्रों के पिता थे। डॉ0 जार्ज रोरिख़, जो बड़े पुत्र थे व एक वैज्ञानिक थे। छोटे पुत्र स्वालोस्लाव रोरिख़ जन्म जात व एक प्रसिद्ध कलाकार थे। अपनी कलाकृतियों के कारण इनको "Romanticist Painter" कहा गया। अपने पिता की प्रथम पुण्य तिथि पर स्वातोस्लाव द्वारा लिखित "LIFE & ART" पुस्तक मयूर पब्लिकेशन बंगलौर ने प्रकाशित की। दो अन्य पुस्तकें "Impression and Reflection" रोरिख़ की दूसरी भारतीय पत्नी मैडम देविका रानी रोरिख़ व स्वातोस्लाव रोरिख़ ने मिलकर प्रकाशित की। दोनों ही पुत्र अपने पिता के कार्य में विशेष रूचि रखते थे।

1906 में रोरिख़ ने इटली व स्विटजरलैण्ड की यात्रा पर 2 स्केच बनाए। स्केच व पेन्टिंग के साथ–साथ रोरिख़ का लेखन कार्य भी स्वतन्त्र रूप से चल रहा था। 1914 में उन्होंने अपने संग्रहीत किए लेखों का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया इसी के साथ 1914 से 1947 तक 27 वृहद ग्रन्थ प्रकाशित किए। जोकि एक कठिन कार्य है। ये लेखन सामग्री उनके विचारों का मूल्यांकन करती है। 1909 में रोरिख ने स्टेज डिजाइन करना आरम्भ किया व इसके साथ–साथ बैले कलाकारों की पोशाकें भी डिजाइन की।

1917 में जब उन्होंने रूस छोड़ा उस समय सम्पूर्ण संग्रहीत कला कृतियों की कुल संख्या 75,000 और मास्टर पेंन्टिंग की संख्या 300 थी। जिनमें 16वीं व 17वीं शताब्दी की डच और फ्लेमिश स्कूल की श्रेष्ठ कलाकृतियां भी शामिल थी।

रोरिख़ ने विषयों की विभिन्नता लिए हुए 7,000 कलाकृतियों का निर्माण किया उनकी प्रारम्भिक कृतियां पुरातत्विक और ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। उसके बाद के समय की कृतियां धर्म व दर्शन से सम्बन्धित हैं और अन्तिम समय की कृतियां प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित हैं। प्रकृति, पर्वतों से परिपूर्ण कलाकृतियों के कारण ही उन्हें Master of Mountains भी कहा गया। उनकी ये कृतियां सौन्दर्य, रंगत, संयोजन व सघनता का अद्भुत मिश्रण है। विश्व–प्रसिद्ध उनकी ये कलाकृतियाँ विश्व भर के कला–संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही हैं। उन्होंने अपनी कला साधना के लिए अनेक देशों की जोखिम भरी यात्रायें की। पांच वर्षों तक एशिया के बीहड़ पहाड़ी क्षेत्रों में घूमते रहे। रोरिख़ ने यूरोप, एशिया, अमेरिका आदि देशों की यात्रा की और अनेक कला संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने देश–विदेश के विभिन्न गरिमामय पदों पर नियुक्ति भी पाई।

कला के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ते हुए और विभिन्न विषयों में अनुसंधान व अध्ययन करते हुए पश्चिम चीन से तिब्बत पार कर 1923 में अपनी पत्नी हेलेना और पुत्र के साथ भारत आए। 1925 में उन्होंने हिमालय की पर्वत श्रंखलाओं की यात्रा प्रारम्भ की। यह यात्रा उनके जीवन व कला के लिए निर्णायक साबित हुयी। वे हिमाचल प्रदेश के कुल्लू व मनाली मार्ग पर स्थित ''नगर'' गांव में बस गये और अपने अन्तिम समय तक यहीं रह कर कला की साधना की।

नैसर्गिक सौन्दर्य के बीच रहकर रोरिख़ ने हिमालय व पर्वत श्रंखलाओं से सम्बन्धित असंख्य चित्र बनाए। इन चित्रों को देखकर ऐसा लगता है मानों हम इन महान शिखरों की आत्मा में प्रवेश कर रहे हैं। रोरिख़ ने हिमालय की आत्मा, वहां के विश्वासों को समझा परखा व आत्मसात किया। हिमालय से सम्बन्धित चित्रों में ''दाता बुद्ध'', ''कल्कि अवतार'', ''चरक त्रिरत्न'' व ''टूटा तारा'' प्रमुख है। रोरिख़ की कला मूलतः प्रकृति पर निर्भर है। उन्होंने प्रकृति को न केवल अपनी कला का विषय बनाया अपितु अपने जीवन का हिस्सा भी बनाया। इसी कारण विश्व के अनेक देशों की यात्रा करके अपने निवास के लिए उन्होंने सौन्दर्यमयी छटा बिखेरता हुआ स्थल भारत में ''कुल्लू'' को चुना।

अत्यन्त मिष्ठभाषी और करुणाशील प्रो0 रोरिख़ ने भयंकर कठिनाइयों में अपना जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति के जीवन, विचार व कला से सम्बन्धित महत्वपूर्ण खोजें की। असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी होने के कारण वे युद्ध व शान्ति के महान लेखक ''ताल्सताय'', रुसी रंगकर्मी ''स्वानिस्वालस्की'' व अनेक प्रसिद्ध भारतीय साहित्यकार व कलाकारों के सम्पर्क में आए। 1942 में पण्डित जवाहर लाल नहेरु रोरिख़ से मिलने कुल्लू आये और 10 दिन उनके साथ व्यतीत किए।

24 वर्षो तक भारत के एक पहाड़ी गाँव मे कला साधना करते हुए 13 दिसम्बर, 1947 को उनका निधन हो गया। 9 अक्टूबर, 1974 को ''सन्त निकोलाई रोरिख़'' का जन्म शताब्दी दिवस मनाया गया। अनेक गणमान्य व्यक्ति उनकी समाधि पर एकत्रित हुए। दोपहर में रोरिख़ को समर्पित एक सभा का आयोजन किया गया। सभा के बाद रोरिख़ की एक कला प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया गया।

मेरा ध्येय इस तथ्य को उजागर करना है जिसके कारण रोरिख़ ने अपने जीवन के अन्तिम 24 वर्ष भारत को समर्पित कर दिये। चित्रकार के रुप में उन्होंने भारत से क्या लिया और उन्होंने भारतीय कला संस्कृति को क्या दिया। उनके जीवन के अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज मुझे प्राप्त हुए हैं और मुझे आशा है कि इस लेख के द्वारा रोरिख़ से सम्बन्धित नई जानकारियाँ और ज्ञान प्रस्तुत कर सकूंगी।

संदर्भ

1. Roerich- by Leonide Andreyev, E. Gollerbach. Mechael Babenst. Chekoff.
2. Nicholas K. Rocrich 1874 – 174
3. By- Department of Languages, Art & Culture Himachal Pradesh, Shimila, India
4. Wonderful Unity – Introduction by B. Gasgi " Himmaval and Himalya The Shrine of Light"